- यदि पौधों को अगले वर्ष भी खेत में रखा जाता है तो फसल को दोबारा भी प्राप्त किया जा सकता है।

फसल के बाद का प्रबंधन :

- अप्रैल और मई माह में फलों के तोड़ने व संग्रहण का समय होता है।
- संग्रहीत फलों को छाया में सुखाकर ऐसे कन्टेनरों में बन्द किया जाता है जिनमें हवा आती–जाती न हो।
- जड़ों को हाथों से बाहर निकाला जाता है और साफ–ताजे पानी में साफ किया जाता है।
- निकाली गई जड़ों को कुछ समय तक पहले धूप में और फिर 10 दिन तक छाया में सुखाया जाता है।
- ठीक–से सुखाई गई जड़ों को अब बैगों में भरा जाता है और ऐसे कंटेनरों में रखा जाता है जिनमें हवा अन्दर–बाहर न जाती हो।

पैदावार:

- प्रति हेक्टेयर में लगभग 600 किलो फल और 300 किलो बीज ताजा फसल प्राप्ति (ईल्ड) हो जाती है।
- यदि फसल को अगले वर्ष भी रखा जाता है तो प्रति हेक्टेयर लगभग 20 क्विंटल सूखी जड़ें भी प्राप्त हो जाती हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिक का विकास राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पॉलीपत्थर, जबलपुर–482008, मध्य प्रदेश द्वारा किया गया है।

बडी कटेरी की खेती

सामान्य नाम : बडी कटेरी
वानस्पतिक नाम : सोलेनम इंडिकम
कुल : सोलेनेसी
उपयोगी भाग : पूरा पौधा, जड़ें व फल
सामान्य उपयोग : अस्थमा, जुकाम, जलोदर, सीने के दर्द, बुखार, पेट दर्द, खांसी, शोफ, बिच्छु डंक पेशाब रुक–रुक कर आना एवं पेट कृमि के ईलाज में उपयोगी होता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

बडी कटेरी

सोलेनम इंडिकम

कुल–सोलेनेसी

एक कांटेदार झाड़ी है जिसकी कई शाखाएं होती हैं। इसकी ऊंचाई 0.3–1.5 मीटर के बीच होती हैं। पौधे के पत्ते गोल–अंडाकार होते हैं और वे बालों से ढके होते हैं।

जलवायु और मिट्टी:

- यह ज्यादातर उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगती है। रेतीली चिकनी मिट्टी और छायादार जगहें इसकी उगाई के लिए उपयुक्त हैं। ऐसे क्षेत्र जहां पेड़ उगाये जाते हैं उनके बीच के स्थानों पर इसे उगाया जाए तो इसकी पैदावार अच्छी होती है।
- **प्रजनन सामग्री** : बीज व पौध

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करना :

- मई–जून में छायादार जगहों में ठीक से तैयार नर्सरी, क्यारियां (साइज 10X1 मीटर) बनाई जाती हैं।
- जुलाई–अगस्त में 1–1/2 माह पुरानी पौध खेत में लगाई जाती है।
- खेत में पौध लगाने की बजाय सीधे बीज भी बोया जा सकता है।
- नर्सरी में क्यारियां तैयार करते समय उर्वरक व पॉल्ट्री खाद का प्रयोग किया जा सकता है।
- बीज की आवश्यकता 4 किलो प्रति हेक्टेयर होती है।

खेतों में रोपण

भूमि तैयार करना और उर्वरक का प्रयोग :

- भूमि की तैयारी वर्षा प्रारम्भ होने से पूर्व ही कर ली जाती है।
- भूमि की जुताई ठीक से कर ली जाती है और उसमें से सभी खरपतवार निकाल लिये जाते हैं।
- जब भूमि तैयार की जाती है तो उसमें प्रति हेक्टेयर 5 टन उर्वरक मिलायी जाती है।
- खेत में नालियां बनाई जाती हैं ताकि पानी उनमें बाहर बह जाए और एकत्र होकर फसल को बर्बाद न करें।

प्रत्यारोपण और पौधों के बीच अन्तर :

- अच्छी तरह से तैयार की गई भूमि में बीजों को सीधे बो दिया जाता है।
- ठीक से अंकुरण के लिए लगभग 20–30 दिनों का समय लगता है।
- पौधों को लगाने के लिए उनमें 30X30 सेंटीमीटर का अन्तर रखा जाता है और प्रति हेक्टेयर लगभग 111000 पौधे लगाये जाते हैं।

अंतर फसल प्रबंधन:

- पौधों की प्रजाति फलदार पेड़ों के बीच भी उगाई जा सकती है।

संवर्धन विधियां :

- जब तक पौधे पूरी तरह से उग नहीं जाते, 20–20 दिनों के बाद उनके आस–पास की खरपतवार को निकालना आवश्यक होता है।

सिंचाई:

- फल आने की अवधि (नवंबर से फरवरी तक) के दौरान एक दिन छोड़कर नियमित रूप से सिंचाई करना आवश्यक होता है।
- चूंकि यह प्रजाति हर मौसम में (सदाबहार) पायी जाती है, अतः गर्मियों में सिंचाई करना आवश्यक है ताकि पौधे जीवित रहें।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और उसे प्राप्त करना :

- फसल अप्रैल तक पक जाती है और इसे काटा जा सकता है इस वक्त प्रजाति 9–10 माह की हो गई होती है।